प्रवचन नं. ३४ गाथा-९-१० ता. १५-७-७८ शनिवार अषाढ सुदी-१० सं.२५०४

समयसार ९-१० गाथा चलती है थोड़ी चल गई, हिन्दी में फिर से।

प्रथम मुख्य बात यह है कि, जो श्रुतज्ञान से भावश्रुतज्ञान, द्रव्य शास्त्र के सुनने से जो ज्ञान हो वह ज्ञान नहीं। यहाँ तो स्वाभाविक सर्वज्ञ स्वभावी प्रभु उसके अवलम्बन से जो ज्ञान हुआ उस ज्ञान को यहाँ भावश्रुत कहते हैं। सर्वज्ञ स्वभावी आत्मा... आत्मा है यह सर्वज्ञ स्वभाव है, अंतर (में) सर्वज्ञ स्वभाव न हो तो सर्वज्ञपना आयेगा कहाँ से ? सर्वज्ञ परमात्मा हुये, वह आये कहाँ से ? आहाहाहा ! यहाँ पुनश्च आज दूसरी तरह आया, यह सर्वज्ञ स्वभावी प्रभु उसके सर्वज्ञ के अवलम्बन से जो ज्ञान अपनी पर्याय में हुआ उसको यहाँ भावश्रुतज्ञान कहते हैं। यह जो कोई जीव भावश्रुतज्ञान से केवल शुद्धआत्मा को... आहाहाहा ! अर्थात भावश्रुतज्ञान से अर्थात भावश्रुतज्ञान से केवल सर्वज्ञ, स्वभावी शुद्धात्मा को... आहाहाहा ! पर्याय में सर्वज्ञपना है नहीं, परंतु

वस्तु तो सर्वज्ञ स्वरूप है।

यहाँ तो विचार - ऐसा आया एवं वह सर्वज्ञ की आज्ञा मानकर फिर परीक्षा करना, अकेली परीक्षा करने जायेगा तो तुम भ्रष्ट हो जाओगे। अभी बतलाया न ? अष्टपाहुड़ उसका यह अर्थ है... सूक्ष्म है भगवान ! सर्वज्ञ स्वभावी भगवान आत्मा... श्रुतज्ञान में उसका ज्ञान हुआ वह सर्वज्ञ स्वभाव के आश्रय से जो भावश्रुतज्ञान हुआ उस भावश्रुतज्ञान में सर्वज्ञ स्वभावी आत्मा का ज्ञान हुआ... आहाहा ! गजब बात है, बहुत गंभीर बात। आहाहा ! (श्रोता :- यहाँ प्रश्न होता है (कि जो) ***अल्पज्ञ है वह सर्वज्ञ को कैसे जाने ?) सर्वज्ञ को जाने यह कहते हैं यहाँ, यही बात लेना है ? अल्पज्ञ पर्याय में सर्वज्ञ स्वभाव की श्रद्धाज्ञान बराबर होती है। फिर भी सर्वज्ञ स्वभावी आत्मा अल्पज्ञ श्रुतज्ञान में आता नहीं परंतु उसका सामर्थ है यह सब ज्ञान आता है।*** बाबूलालजी ! बहुत बापू ! आहाहा ! आहा !

रात्री को कहा था न ? आहाहा ! क्षेत्र का अंत कहाँ ? क्या चीज है यह ? आकाश... आकाश... आकाश... आकाश... चौदह ब्रह्मांड़ जो असंख्य योजन में है उसके बाहर अनंत... अनंत... अनंत... अनंत... अनंत... अनंत... चले जाओ तो कहीं आकाश का अंत है, देखो क्या कहते हैं यह ? ***इस आकाश का अंत नहीं कहीं, आहाहा ! और काल की शुरुआत नहीं कि पहली आत्मा कौन एवं पहली पर्याय कौन ? आहाहाहा ! यह भी कोई अचिंत्य अनादि यह वस्तु, और आत्मा के अनंतगुण जो है, यह भी आकाश के प्रदेशों की संख्या से अनंतगुणे गुण हैं, भाई मार्ग बहुत अलौकिक है बापू ! आहाहा ! आकाश के जो प्रदेश है उससे अनंतगुणे गुण... इतने में अनंतगुणे गुण (हैं) ! क्या है यह ? ओहोहो ! और अनंतगुण हैं कितने कि संख्या अपेक्षा कहीं अंत नहीं आये, फिर भी वहाँ है। आकाश का अंत न आये फिर भी - ऐसा है, काल का अंत न आये फिर भी - ऐसा है।*** आहाहाहा !

ऐसे भगवान आत्मा अपने सर्वज्ञ स्वभाव को जानकर जो श्रुतज्ञान हुआ, उस श्रुतज्ञान की पर्याय में भी सर्वज्ञ स्वभाव की प्रतीति आई, और इस सर्वज्ञ स्वभाव का पर्याय में ज्ञान आया, फिर भी वह सर्वज्ञ स्वभावी चीज (यह) पर्याय में नहीं आती। आहाहा ! एक बात... इतनी वर्तमान श्रुतज्ञान की पर्याय सारे सर्वज्ञ स्वभाव को जाने तो भी जो सर्वज्ञ संपूर्ण स्वभाव है उसमें से श्रुतज्ञान हुआ तब उसको जानने की पात्रतावाली इतना आया, फिर भी उस स्वभाव में कमी हुयी नहीं। आहाहाहाहा ! और उसमें केवलज्ञान हो... माणेकचन्द्रभाई ! आहाहा ! प्रभु मार्ग कोई अलौकिक है। आहाहा ! यह सर्वज्ञपना प्रगट हुआ तो भी सर्वज्ञ स्वभाव में अंदर में कमी हुई अन्दर - ऐसा नहीं। आहाहाहा !

और सर्वज्ञ पर्याय प्रगट हुई, उसके जो अविभाग प्रतिछेद अनंत है क्योंकि सर्वज्ञ तो अनंता सर्वज्ञों को भी जानते है, अनंत सर्वज्ञो को भी जानते है। आहाहा ! तब यह सर्वज्ञ की पर्याय में जितने भाग अविभाग अंश पड़ते हैं, अनंत... अनंत.. आहाहा ! इतना ही यह अनंत, द्रव्य में हैं ज्ञान गुण में, आहाहा ! केवलज्ञान की पर्याय में जितनी सामर्थता अविभाग जिसका भाग न हो - ऐसा छेद करके। अनंत...अनंत... अविभाग... (अंश) प्रभु मार्ग बहुत दुर्लभ है भाई ! आहाहा ! फिर भी यह चीज तो तुम्हारे पास पड़ी है अंदर। आहाहा ! ***यह सर्वज्ञ को यह अनंत अविभाग प्रतिच्छेद प्रगट हुये (तो भी) उतना का उतना ज्ञायक, इस में अनंत अविभाग प्रतिछेद है। आहाहाहा !***

ऐसी शक्ति जो है - ऐसा सर्वज्ञप्रभु स्वभाव और सर्वज्ञ जो पर्याय हुई। आहाहा ! उसमें तो अनंत अगुरुलघु पर्याय (प्रगट हुई)... भाई यह क्या है ? सर्वज्ञ पर्याय में अनंत गुणी वृद्धि हो जाये और अनंत गुण हानि हो जाय...। पर्याय ऐसी...ऐसी... आहाहा ! क्या है यह ? समझ में आया ? यह केवलज्ञान की पर्याय, यहाँ तो अपने श्रुतज्ञान से आत्मा जाने इसमें यह लेना है। कि ऐसी केवलज्ञान की पर्याय जो अनंतो होगी यह भी सब शक्तिरूप ज्ञानगुण में सर्वज्ञपने में पड़ी है। यह सर्वज्ञ स्वभावी आत्मा जिस ज्ञान से जानने में आती है इस ज्ञान को यहाँ श्रुतज्ञान कहते हैं। आहाहाहा !

सूक्ष्म बात है बापू ! यह कोई कहानी किस्सा नहीं। यह तो सर्वज्ञ त्रिलोकनाथ जिनेन्द्रदेव की बात है आहाहा ! अगाध अगाध गंभीर चीज है। कभी अभ्यास किया नहीं कभी सुना नहीं आहाहा !

ऐसे एक-एक गुण की एक-एक पर्याय में अनंतअविभाग प्रतिच्छेद इतने के इतने गुण में इतने अविभाग प्रतिच्छेद। आहाहा ! यह अविभाग प्रतिच्छेदवाली पर्याय प्रगट हुई फिर भी अंतर में तो जितने अविभाग प्रतिच्छेद गुण में तब शक्ति तो इतनी की इतनी रहती है। सर्वज्ञपना प्रगट हो तब भी ज्ञायकपना सर्वज्ञ स्वभावी वस्तु है तब इतनी की इतनी है, और मतिज्ञानपर्याय, श्रुतज्ञानपर्याय केवलज्ञान के अनंतवें भाग है, तब भी ज्ञायक भाव में सर्वज्ञ स्वरूपी जो आत्मा वह तो इतना का इतना है। आहाहाहाहा ! समझ में आया ? भाई यह तो अलौकिक बातें है। सर्वज्ञ जिनेश्वर देव ! जिसने एक समय में तीनकाल तीनलोक देखा... भाई यह कोई मार्ग अलौकिक है प्रभु। आहाहाहा ! ***ऐसे आत्मा (में) सर्वज्ञ की पर्याय प्रगट हो तब भी कहते हैं कि सर्वज्ञ की पर्याय का कर्त्ता सर्वज्ञ (का) द्रव्य नहीं।*** माणेकचन्दभाई ! कहाँ यह बात। आहाहा ! लोग कहाँ अटके है कहाँ वस्तु पड़ी है यह। ***सर्वज्ञ पर्याय प्रगट हुई, आहाहा ! ऐसी अनंती पर्याय ज्ञान गुण में है - ऐसा सर्वज्ञ स्वरूपी प्रभु श्रुतज्ञान***

से जानने में आता है। आहाहाहा ! यह भावश्रुतज्ञान की ताकत कितनी ? आहाहा ! समझ में आया ?

और यह सर्वज्ञ पर्याय प्रगट होती है, उसका कर्त्ता द्रव्य नहीं, (आत्म) द्रव्य नहीं यह पर्याय-पर्याय का कर्त्ता, फिर भी आई है द्रव्यमें से। आहाहा ! यह किस अपेक्षा से बात है ? आहाहा ! यह पर्याय तो अपनी सत् अहेतुक, आहाहाहा ! स्वतंत्र पर्याय हुई द्रव्य के कारण से नहीं, गुण के कारण से नहीं। आहाहा ! प्रभु तुम्हारी बलहारी है। आहाहा ! यह उसका जो चैतन्य स्वभाव सर्वज्ञपना हुआ तब यह चैतन्य स्वभावने प्रगट किया - ऐसा नहीं, पर्याय है न ? ऐसी बात है। आहाहा ! अरेरे ! इसने भगवान सर्वज्ञ की जो आज्ञा (मानी नहीं) यहाँ तो विचार क्या आया कि सर्वज्ञ की आज्ञा मानकर परीक्षा करना, बिना परीक्षा किये अकेली आज्ञा मानने जायेगा तो भ्रष्ट हो जायेगा। - ऐसा आया न, अभी बतायेंगे न ? आहाहाहा ! बापू वस्तु ऐसी अंदर है। जो सम्यग्दर्शन, उसके साथ हुआ श्रुतज्ञान इसमें इतनी ताकत है कि जो अंदर सर्वज्ञ अनंती पर्याय प्रगट हो - ऐसा गुण स्थित है, और अनंती समकित की पर्याय प्रगट होगी, यह सब श्रद्धागुण में स्थित है अंदर। आहाहा ! और अनंत अनंत आनंद प्रगट होगा केवली को, ऐसी अनंत आनंद की पर्याय जिसके आनंद गुण में स्थित है। आहाहाहा ! अनंत वीर्य परमात्मा को प्रगट होता है...

भाई भाषा भले हिन्दी परंतु भाव तो जो है सो है। कभी अभ्यास नहीं, यह बात अभी चलती नहीं। अरेरे ! उनको अनंत वीर्य जो प्रगट हुआ परमात्मा को, तो भी अंदर वीर्य की पूर्णता उसमें कमी आयी नहीं, और पूर्ण वीर्य जो है यह अनंत वीर्य प्रगट है उसका यह कर्त्ता नहीं, आहाहाहा ! (श्रोता :- अद्‌भुत आश्चर्य लगता है) आश्चर्य की बात है बापा ! आहाहा !

एक अंगुली के असंख्य भाग में निगोद के अनंत जीव अंगुली के असंख्यभाग में असंख्यशरीर एक शरीर में अनंतजीव एक-एक जीव सर्वज्ञ स्वभावी। आहाहा ! बापू यह क्या चीज है ? यह जिनवर देव के अलावा कहीं नहीं। आहाहाहा ! अरे प्रभु का विरह पड़ा, भगवान है नहीं, वस्तु का विरह, (परंतु) पर्याय में वस्तु का विरह नहीं पर्याय उसको जाने तो पर्याय में भगवान का विरह नहीं है। आहाहा !

क्या कहा ? वैसे तीनलोक के नाथ महाविदेह क्षेत्र में रह गये। भरतक्षेत्र में विरह पड़ा, परंतु यहाँ ऐसी सर्वज्ञ शक्ति का भण्डार भगवान (आत्मा) वह सर्वज्ञ (को) श्रुतज्ञान से जाने तो, उसको विरह नहीं। (श्रोता :- भगवान का विरह नहीं दिखता है) बराबर भाई ! आहाहा ! ओहोहो ! यह तो पुनः हिन्दी लिया, यह तो फिर से निकले तो यही बात बापा क्या कहें ! आहाहाहा ! यह वस्तु का स्वभाव एक

परमाणु में अनंतगुण और एक अंगुल के असंख्य भाग में एक आकाश के प्रदेश में अनंत परमाणु रहते है और एक-एक परमाणु में जितने आकाश के गुण है, जितने जीव के गुण है, उतनी संख्या में (एक) परमाणु में गुण है। यह क्या चीज है यह तो ! छोटा भाई ! यह कहीं कलकत्ता, में मिले - ऐसा नहीं (श्रोता :- यह ज्ञान पता लगा लेता है) आहाहाहा !

यहाँ तो श्रुतज्ञान से आत्मा जाने इसका अर्थ चलता है कि आत्मा कितना- कैसा ? ***जिसमें अनंत अनंत गुण और अनंती पर्याय जो केवलज्ञानादि की प्रगट होती है उसका स्वभाव अंदर पारिणामिक भावरूप भाव। सर्वज्ञ जानते कि यह पर्याय यह आई और यह पर्याय यहाँ से गई और यहाँ जायेगी। आहाहा ! यह सर्वज्ञ जानते यह।*** आहाहा ! अगुरुलघु की षट्गुणी हानिवृद्धि, केवलज्ञान की भी पर्याय इसमें अनंतगुण वृद्धि और अनंतगुण हानि हो जाती एक समय में फिर भी वह पर्याय तीनकाल, तीनलोक को जाने, वह इतनी की इतनी रहती है। क्या है यह ? ***द्रव्यमें से अनंती पर्याय प्रगट होती है फिर भी द्रव्य वैसा का वैसा (इतना का इतना) रहेगा। गुणोंमें से अनंत पूर्ण पर्याय प्रगट हो तब भी गुण इतना का इतना रहेगा। आहाहाहा ! और पर्याय भी... आहाहा ! पूर्ण प्रगट हो, वह भी पूर्ण पर्याय में पर की अपेक्षा से उत्पन्न हुई - ऐसा नहीं।*** आहाहाहाहा ! - ऐसा जो भगवान आत्मा गंभीर रहे प्रभु ! परंतु सुनना तो पड़ेगा प्रभु ! आहाहा ! अनंत अनंतगुण जो अनंतपूर्ण पर्याय उस पूर्ण पर्याय में अनंतगुणी हानि-वृद्धि अगुरुलघु भाव। ओहोहोहो ! (श्रोता :- हानि-वृद्धि क्या ?) यह हानि-वृद्धि ख्याल में नहीं आये इसलिये तो बात रखी है। ***केवलज्ञान पर्याय तीनकाल, तीनलोक को जाने - ऐसी पर्याय इतनी की इतनी रहे फिर भी उसमें अनंतगुण हानिवृद्धि हो यह तो सर्वज्ञ जाने।*** आहाहा ! (केवली जाने) ऐसी बात है। बहुत लम्बी बात करें, तब षट्गुण हानि-वृद्धि, ***प्रत्येक गुण बड़ी बात... लम्बीबात... प्रत्येक पर्याय मतिज्ञान की एक समय की पर्याय में षट्गुण हानिवृद्धि, एक केवलज्ञान की पर्याय होती, षट्गुण हानिवृद्धि, (जो) अनंत आनंद हुआ उसमें भी षट्गुणहानि-वृद्धि।*** आहाहा !

क्या है यह तो ? प्रभु तुम्हारे स्वभाव की अचिंत्य महिमा (है) यह कोई विकल्प से पार नहीं आयेगा, आहाहा ! - ऐसा कहना है। आहाहा ! उस शुभराग से यह पता लग जाये... राग की मर्यादा की अभी तो सीमा है। आहाहाहा ! भले आत्मा की श्रुतज्ञान की पर्याय भी मर्यादित है केवलज्ञान की अपेक्षा से अनंतवें भाग, तो भी यह ज्ञान... आहाहाहा ! फिर भी सर्वज्ञ की अनंती पर्यायें प्रगट हों ऐसी द्रव्य में (शक्ति है) उस द्रव्य को यह श्रुतज्ञान बराबर जानता है। आहाहाहा ! समझ में

आया ? भाई ! वीतरागमार्ग जिनेश्वरदेव का मार्ग दूसरा (अपूर्व) अलौकिक है। ओहोहो ! जैसे जैसे गहराई में जाते है उसी उसी प्रकार थाह (पता) गहरी गहरी लगती रहती (है) आहाहा !

यहाँ कहते हैं, श्रुत से... यह श्रुत, भावश्रुत लेना (समझना) वर्तमान भावश्रुतज्ञान कि जो त्रिकाली सर्वज्ञ स्वभाव के अवलम्बन से हुआ, जिसके अवलम्बन से हुआ, उसको यह श्रुतज्ञान पूर्ण जानता है। आहाहाहा ! अरे ! समयसार और उसकी टीका और उसके शब्द ? जो जो श्रुत से भावश्रुतज्ञान से क्या ? यह सर्वज्ञ भगवान की वाणी सुनी है, वाणी में भी बहुत आता है... बात स्वपर की सुनी और जो ज्ञान हुआ, वह हुआ अपने से, फिर भी वह ज्ञान की पर्याय परलक्षी है, उसकी बात यहाँ है नहीं, इस परलक्षी ज्ञान से आत्मा जानने में आता है - ऐसा है नहीं। समझ में आये इतना समझना प्रभु तुम्हारी प्रभुताका पार नहीं नाथ। आहाहाहा !

तुम्हारी एक-एक शक्ति में ईश्वरता भरी है अनंत शक्तियोंमें से एक-एक शक्ति में अनंत प्रभुता भरी है। आहाहाहा ! ***यहाँ तो - ऐसा कहना है कि ऐसी अनंती प्रभुता का रूप एकरूप वस्तु... सर्वज्ञ स्वभाव में भी अनंती प्रभुता है। सर्वदर्शी में अनंत प्रभुता है। प्रभुता गुण में भी अनंत प्रभुता है। श्रद्धा गुण में (भी) अनंत प्रभुता है। चारित्र में अनंती प्रभुता है। अस्तित्वगुण में अनंती प्रभुता है। ऐसे ऐसे अनंत अनंत गुण एक एक गुण में अनंती प्रभुता, अनंती ईश्वरता ऐसी अनंती ईश्वर(ता) के गुण का धरनेवाला ईश्वरप्रभु... वह कोई दूसरा ईश्वर नहीं। आहाहा ! उस ईश्वर को (निज को) श्रुत से केवल शुद्धात्मा को जानते है।*** आहाहाहा ! ऐसे श्रुतज्ञान से केवल एकरूप आत्मा त्रिकाल, केवल शुद्ध आत्मा को जानते हैं। आहाहा ! समझ में आता है ? आहाहाहा ! फिर यह दूसरी तरह आया, कल दूसरी तरह से था। यह कहीं... आहाहा !

यह, जो कोई प्राणी आत्मा अपना भावश्रुतज्ञान से जो सर्वज्ञ स्वभावी प्रभु ! आश्चर्यकारी अद्‌भुत शक्ति का भण्डार भगवान एक हो ! ऐसी तो अनंती शक्तियाँ है। आहाहा ! ऐसी वस्तु जो प्रभु अपनी पूर्व चीज वह श्रुत से जो जाने केवल शुद्ध आत्मा को जो जाने, अकेले शुद्ध आत्मा को जाने - ऐसा कहते हैं। देखा ! आहाहा ! श्रुत (ज्ञान) से श्रुत को (द्रव्य श्रुत) जाने - ऐसा नहीं कहा भाई, क्या ? क्या कहा ? आहाहाहा ! एक भावश्रुतज्ञान जो हुआ बापू ! यह तो अपूर्व बात है भाई, इस भावश्रुतज्ञान से, भावश्रुतज्ञान जाना - ऐसा नहीं कहा। आहाहाहाहा !

यह सर्वज्ञ की वाणी इन्द्र सुनते होंगे। हाँ ! उनकी बात है यह। आहाहा ! एक भवावतारी इन्द्र और उनकी पत्नी, स्त्री भी एकभवावतारी है, पति-पत्नी दोनों एक

भव (बाद) मोक्ष जानेवाले हैं, सौधर्म देवलोक के (इन्द्र) ! यह भगवान की वाणी सुनने को जाते हैं, प्रभु यह वाणी कैसी होगी ? आहाहा ! इस वाणी में कैसी आश्चर्यता आती होगी ? आहाहा ! आहाहाहाहा ! इस वाणी में कितनी गंभीरता, आहाहा ! यहाँ तो कुछ साधारण बोलना जहाँ तहाँ समझे कि आहाहा ! हम तो समझें कि कुछ बढ़ गये न आगे बढ़ गये। अरे प्रभु सुन तो सही भाई !

जो श्रुतज्ञान से, श्रुतज्ञान को जानते हैं - ऐसा नहीं कहा, भावश्रुतज्ञान से इस आत्मा को जानें, त्रिकाल अनंती शक्तियों का भण्डार और एक-एक शक्ति भी अनंत अनंत स्वभाव का भण्डार - ऐसा एकरूप प्रभु आत्मा, आहाहाहा ! उसको जाने वह श्रुतकेवली है। (वही) श्रुतकेवली हैं उन्होंने पूर्ण आत्मा को जाना यह श्रुतज्ञान, इसलिये यह श्रुतज्ञान यह पूर्ण श्रुतज्ञानी है, आहाहाहाहा ! यह श्रुतकेवली है, सम्यग्दर्शन हुआ, पूर्णानंद का नाथ अनंतशक्ति का भण्डार एक-एक शक्ति में अचिंत्य अचिंत्य समर्थ जो एकदम अज्ञानी के साधारण तर्क से भी पता न लगे - ऐसा वीतरागी ने जो भाव देखा और कहा... - ऐसा है... ऐसे आत्मा को जो जानते हैं, आहाहाहा ! यह श्रुतकेवली है, समझ में आया ? यह श्रुतकेवली परमार्थ से श्रुतकेवली है। आहाहा ! आया ? वह तो परमार्थ है। है ? इस एक पंक्ति (में) कितना भर (दिया) है। संत... दिगम्बर संतों की वाणी। आहाहाहा !

जो कोई भावश्रुतज्ञान द्वारा, आहाहा ! आत्मा को जाने, भावश्रुतज्ञान से श्रुत को जाने या पर्याय को जाने - ऐसा नहीं कहा। भावश्रुतज्ञान से केवल आत्मा को जानें, प्रभु को जानें। आहाहाहा ! आहाहाहा ! मैं पूर्ण परमात्मद्रव्य हूँ - ऐसा जो भावश्रुतज्ञान द्वारा जाने यह श्रुतकेवली परमार्थ से है, यथार्थ में वास्तविकता में वह श्रुतकेवली है। (श्रोता :- जानवर को होता है)

जानवरों को होता है, पशु को, नारकी को होता है, सम्यग्दर्शन का भाव सातवां नरक, ***जहाँ जानेवाले मिथ्यादृष्टि जाते है वहाँ समकिति नहीं जाते, परंतु जाने के बाद सम्यग्दर्शन हो सकता है वहाँ से निकलते समय भी मिथ्यात्व हो जाता है, परंतु बीच के समय में सम्यग्दर्शन होता है।*** सातवां नरक। आहाहा ! यह भी जो भावश्रुतज्ञान से आत्मा को जाने। आहाहाहा ! वह श्रुतकेवली है, भाई यह तो - ऐसा कहा तिर्यंच में - ऐसा ? परंतु नरक में भी - ऐसा और तिर्यंच में भी पशु असंख्य मौजूद है ***बाहर ढ़ाई द्वीप बाहर असंख्य पशु है। सिंह बाघ मच्छ, कौआ असंख्य है उसके असंख्य में भाग असंख्य समकिति है, इन समकिति को यहाँ श्रुतकेवली कहा। आहाहाहा ! भगवान आत्मा अंदर, आहाहाहाहाहा ! जिसकी पर्याय की पूर्ण सामर्थ की शक्ति भी अपने से हुई है, यह त्रिकालीमें से नहीं। आहाहा ! - ऐसा त्रिकाली भगवान***

ज्ञायक स्वरूप प्रभु पूर्ण है। भाई ! यह वस्तु कोई अगम्य है। आहाहा ! अगम्य को गम्य करना है। हाँ। आहाहा !

यह (जो) तिर्यंच है यह भी सम्यग्दृष्टि है, भावश्रुत से केवल प्रभु आत्मा पूर्णानंद का नाथ सर्वज्ञ स्वभावी, सर्वदर्शी स्वभावी, पूर्ण आनंद स्वभावी, पूर्ण वीर्यस्वभावी, पूर्ण प्रभु स्वभावी, पूर्ण कर्त्ता स्वभावी, पूर्ण कार्य स्वभावी, पूर्ण कार्य स्वभाव उसका अंदर में (है) आहाहा ! पूर्ण साधन स्वभावी, आहाहा ! पूर्ण आधार स्वभावी, आहाहाहाहा ! ऐसे आत्मा का अवलम्बन लेकर जो ज्ञान हुआ... यह ज्ञान उसको जानता है। समझ में आया ? यह ऐसी कोई बात है शास्त्र में - ऐसा तो लक्ष्य करना। समझ में आया ? कोई सिद्धांत, सर्वज्ञ त्रिलोकनाथ दिगम्बर संतों की उनकी वाणी में कोई बहुत गंभीरता है, गंभीरता। भाव की ऐसी कोई चीज है - ऐसा तो लक्ष्य करना। आहाहा ! समझ में आया ?

`यह परमार्थ है' यह परमार्थ है जो अंतर में राग का लक्ष्य छोड़कर, त्रिकाली स्वरूप का लक्ष्य करके जो ज्ञान हुआ, यह ज्ञान जिसके लक्ष्य से हुआ उसको वह ज्ञान जाने। आहाहा ! यह तो परमार्थ श्रुतकेवली है। आहाहा !

गिलहरी होती है, खिसकोली क्या कहते हैं (श्रोता :- गिलहरी) गिलहरी उसको सम्यग्दर्शन होता है, हाथी को होता है, भरत नहीं, आया था, भरत का मित्र हाथी था, उस पर बैठ कर जाते थे वह भगवान का दर्शन करने को तब भरत को वैराग्य हो गया, दीक्षा लेली तो हाथी को जातिस्मरण हो गया, विचार करता कि अरे ! यह तो मेरा मित्र, एकदम (वैराग्य हुआ) पन्द्रह-पन्द्रह दिन के अंतर से आहार लेता था, अपने स्वाध्याय मंदिर में (चित्र) है और आत्मज्ञान। आहाहा ! शरीर वह चाहे हाथी का हो कि मनुष्य का हो कि छिपकली का हो, छिपकली समझते (है) ? छोटी-छोटी होती है छिपकली ? जीवों को पकड़ती है। आहाहाहा ! उसमें भी आत्मा अंदर है न प्रभु ? शरीर यह भिन्न चीज है, आत्मा भिन्न चीज है। आहाहा ! उसको भी जब श्रुतज्ञान से आत्मा का ज्ञान होता है तब उसको श्रुतकेवली कहा जाता है। आहाहा ! और... एक बात हुई परमार्थ श्रुतकेवली। आहाहा ! आहाहा !

जिसने अंदर में भावश्रुत से आत्मा को जाना वह अपना स्वरूप साधने को, विशेष साधने को कुटुंब, स्त्री आदि छोड़कर वन में चले जाते हैं, वह कैसी चीज होगी ? माता-पिता, हजारों रानियाँ और जिनके यहाँ नीलमणि का तो फर्स, (टाइल्स) मकान में नीलमणि का फर्स - ऐसा मकान और स्त्रियाँ, चक्रवर्ती का लड़का हो, महारानी हो परंतु जब निज का भान हुआ अंदर में, अरे ! मैं तो आनंद का नाथ श्रुतकेवली यह मेरी वस्तु तो पूर्ण। अरेरे ! हमें साधना (है) अपने स्वरूप की विशेष साधना

करना (है) मैं तो निवृत्ति लूंगा। आहाहा ! यह हजारों रानियाँ मात-पिता यह बंगला, नीलमणि का फर्स, स्फटिक (मणि) के मकान, बापू तीनलोक का नाथ (निजात्मा) यहाँ ज्ञात हुआ है, उसको साधने के लिये, जैसे (कफ) बलगम को छोड़ते हैं, इसीप्रकार चक्रवर्ती का राज्य छोड़ते है। आहाहा ! बलगम समझते है ? थूंक ऐसे अंदर के आनंद का नाथ (ज्ञायक प्रभु) जब जानने में आया, उसको साधने को, अंतर स्वरूप में स्थिर होने को, यह नीलगणि एवं स्फटिक के मकान तिनके की तरह छोड़कर चले जाते हैं जंगल में। सिंह और श्यार के बीच में जहाँ आहार-पानी का बिन्दु न मिले। आहाहा !

क्या होगा मेरा जंगल में ? होगा मुझे जंगल में केवलज्ञान ! आहाहा ! अतीन्द्रिय आनंद का भोजन करते-करते अतीन्द्रिय आनंद प्रगट होगा। आहाहा ! बाबूलालजी ! ऐसी चीज सुनने मिलती नहीं अभी ! प्रभु क्या करें भाई। आहाहा ! त्रिलोकनाथ अनंत जिनेनद्रों की यह पुकार है। अनंत तीर्थंकरों अनंत केवलियों आहाहा ! यह अनंत तीर्थंकरों ने केवलियों ने भी एक समय में जाननेवाली शक्ति उसको अनंत को जानती ऐसी अनंत पर्याय, अनंतीं पर्याय तो अंदर एक ज्ञान गुण में मौजूद है - ऐसा ज्ञान गुण संपन्न प्रभु और अनंतगुण का स्वरूप एक, केवल ऐसे आत्मा को जिसने जाना। आहाहा ! परमार्थ श्रुतकेवली है। संत कहते हैं कि हम कहते हैं कि यह परमार्थ श्रुतकेवली है। आहाहा ! श्रुत से जानना था पूर्ण यह सब उसने जान लिया। समझ में आया ? ***यह सम्यग्दर्शन कहो कि श्रुतज्ञान कहो, ज्ञान की अपेक्षा से श्रुतज्ञान और प्रतीति की अपेक्षा से सम्यग्दर्शन।*** आहाहा !

'**और जो सर्वश्रुत को जानते है**' क्या कहते हैं ? कि जो आत्मा परिपूर्ण वस्तु है उसको जो ज्ञान जानता है, उस ज्ञान को यहाँ सर्व ज्ञान कहने में आया है। पहले तो ज्ञान (अर्थात) श्रुतज्ञान से आत्मा जाना यह परमार्थ श्रुतकेवली है, अब जो श्रुतज्ञान है, सर्व श्रुत को जानते हैं। आहाहा ! द्रव्यश्रुत की बात यहाँ नहीं, अंतर ज्ञान की पर्याय में संपूर्ण आत्मा जानने में आया, ऐसे ज्ञान को सर्वज्ञान कहते हैं। वह सर्वज्ञ (का) ज्ञान - ऐसा नहीं। आहाहा ! सर्वज्ञान ज्ञान में परिपूर्ण प्रभु, पूर्ण सर्वज्ञ स्वभावी, जिस ज्ञान ने जाना उस ज्ञान को सर्वज्ञान कहा जाता है, (आहा !) सर्वज्ञान कहा जाता है। (ओहो) सर्वज्ञान कहा जाता है। आहाहाहा ! जिस ज्ञान से आत्मा को जाना वह परमार्थ श्रुत यह परमार्थ केवली। और जिसने इस जाननेवाली चीज को जाना, उस ज्ञान को सर्व ज्ञान कहते हैं। आहाहाहा ! गजब बात करते हैं सर्वज्ञ स्वभावी भगवान को जाना, तब उस ज्ञान को सर्व ज्ञान कहते हैं। आहाहाहा !

अरेरे ! (यह) भरतक्षेत्र ! कहाँ प्रभु ! और कहा महाविदेह और कहाँ यह स्थिति।

ओहोहो ! यह भगवान के पास कैसी वाणी, कैसे श्रोता। आहाहा ! यहाँ से परमात्मा के पास गये थे, निश्चय परमात्मा और व्यवहार परमात्मा, कुन्दकुन्दाचार्य ! आहाहा ! वह कहते हैं कि जो ज्ञान अंदर का भावज्ञान जो आत्मा को जानने की लायकातवाला भावज्ञान उसे हम सर्व श्रुतज्ञान कहते हैं। आहाहाहाहा ! ***क्योंकि जो सर्वज्ञ स्वभावी आत्मा उसको जाननेवाला ज्ञान इस ज्ञान को सर्वज्ञान कहते हैं। भले सर्वज्ञ नहीं परंतु `सर्वज्ञान' (तो है) आहाहाहा ! इसप्रकार श्रुतज्ञानरूपी `सर्वज्ञान'।*** आहाहा ! समझ में आया ? बापू वीतराग मार्ग सूक्ष्म अरे प्रभु मिले नहीं अभी इनको हाँ। आहाहाहा ! अरेरे ! मनुष्य का भव यह भव के अभाव के लिये यह भव है यह कहीं दुनियाँ में पैसा कमाने और धंधा करने इसके लिये यह भव नहीं प्रभु। बाहर का बड़प्पन मिलना और... आहाहा ! मनुष्य की परिभाषा ज्ञायते इति ज्ञानम ते मनुष्य। आहाहाहा ! जो आत्मा को जाने उसे मनुष्य कहते है बाकी पशु है। आहाहा !

यह शरीर की सुन्दरता और लक्ष्मी की अधिकता और बड़प्पन, मकान बड़ा सुन्दर संगमरमर या स्फटिक के बड़े-बड़े मकान। आहाहा ! यह काल का ईंधन, काल की अग्नि के लिये ईंधन समान है। ईंधन, जैसे अग्नि में लकड़ी जल जाती है।आहाहाहाहा ! परमात्मप्रकाश में है। करोड़ों रुपया का मंदिर बनाया हो परंतु कालरूपी अग्नि का ईंधन हो जायेगा। आहाहाहा ! प्रभु यह कहीं शाश्वत चीज नहीं। आहाहा ! शाश्वत चीज को जिसने जाना उस ज्ञान को `सर्वज्ञान' कहते हैं। नवरंगभाई ! आहाहाहा !

जो सर्व श्रुतज्ञान को जानते हैं। आहाहाहा ! जिस ज्ञानसे भावश्रुतज्ञान हो। आत्मा जाना उस ज्ञान को सर्व श्रुतज्ञान कहते हैं। आहाहा ! यह सर्व श्रुतज्ञान को जानते है, सर्व श्रुतज्ञान को जानते, इसमें पहले आया कि श्रुतज्ञान से आत्मा को जानते हैं यहाँ सर्व श्रुतज्ञान, सर्व श्रुतज्ञान को जानते है। अब पर्याय आ गई और व्यवहार आया। आहाहा ! समझ में आया ? ***जो सर्व श्रुतज्ञान को जानते है वे श्रुतकेवली है, परंतु यह व्यवहार, क्योंकि सर्वज्ञान है सर्व को जाना - ऐसा ज्ञान इस ज्ञान को व्यवहार श्रुतकेवली कहते हैं, ज्ञान को व्यवहार श्रुतकेवली कहते हैं और ज्ञान से आत्मा को जाने उसे परमार्थ श्रुतकेवली कहते हैं।*** आहाहा !

सभी अनजान बातें, वहाँ कोई तीर्थ करना यात्रा करना यह करना बापू... आहाहाहा ! तीनलोक का नाथ अरे पर्याय के प्रेम में आलस में रूका है। (एक तरफ आड़में) राग के प्रेम में (रुका), अंदर बड़ा भगवान होने पर भी एकतरफ रह गया। आहाहा !

यहाँ कहते हैं, जो सर्व श्रुतज्ञान को जानते है। सर्व श्रुत, ज्ञान को जानते है, ***प्रथम क्या कहा था केवल शुद्धात्मा को जानते है - ऐसा कहा था परंतु अब यहाँ***

ज्ञान ज्ञान को जानता है यह गुण-ज्ञानगुण (की) पर्याय हुई उसको जानते है। आहाहाहा ! यह व्यवहार से श्रुतकेवली है। यह व्यवहार है। आहाहाहा !

राग, दया, दान, भक्ति एवं राग यह व्यवहार इसकी बात यहाँ नहीं। आहाहाहा ! यह तो असद्भूत, यह तो उसकी पर्याय में है, आहाहा ! तो उस ज्ञान को व्यवहार कहते हैं। आहाहा !

क्योंकि यह `ज्ञान सो आत्मा' इसप्रकार ज्ञान सो आत्मा - ऐसा ज्ञान के साथ आत्मा का तादात्म्य संबंध है यह बताने को सद्भूत व्यवहारनय से श्रुतज्ञान को जाननेवाले को व्यवहार श्रुतकेवली कहा। आहाहाहा ! यह गाथा का अर्थ हुआ। अब उसका स्पष्टीकरण।

`यहाँ दो पक्ष लेकर परीक्षा करते है' किसकी ? कि यह श्रुतज्ञान वह सर्वश्रुतज्ञान वह श्रुतज्ञान है यह आत्मा के साथ तादात्म्य संबंध रखता है इसलिये उसे हमने व्यवहार श्रुतज्ञान कहा। उसका कारण क्या ? उसका कारण हेतु क्या ? यहाँ दो पक्ष लेकर परीक्षा करते हैं... लो परीक्षा तो आयी। ***आज्ञा को प्रधान रखकर परीक्षा करना यह तो आया उसमें बताया न अभी अकेली आज्ञा छोड़कर मात्र परीक्षा करके जो मानेगा तो भ्रष्ट हो जायेगा।*** आहाहा ! बताया है न उसमें ?

अल्पज्ञानियों में बैठकर महंतबुद्धि रखे तो अपना प्राप्तज्ञान भी नष्ट हो जायेगा। आहाहाहाहा ! इसप्रकार निश्चय व्यवहार आगम की कथन पद्धति को जानकर निश्चय व्यवहार आगम कथन पद्धति को समझकर उसका श्रद्धान करके यथा शक्ति आचरण करना। इस काल में, आहाहा ! गुरु संप्रदाय के बिना महंत नहीं बनना। आहाहाहा ! गुरुगम जिसे न मिला हो इस भव में कि परभव में गुरुगम तो मिला नहीं और अपनी स्वच्छंदता से पढ़ते और समझते कहते हैं। आहाहा ! हाँ ? गुरु सम्प्रदाय के बिना महंत नहीं बनना। जिन आज्ञा का लोप नहीं करना, हाँ ? आहाहा ! कोई कहता है कि हम तो परीक्षा करके जिनमत को मानेंगे, वह वृथा (बेकार में) बकते हैं।

बापू यह अलौकिक बातें (है) प्रभु, यह क्षेत्र स्वभाव, काल स्वभाव, भाव स्वभाव यह पर्याय स्वभाव आदि कोई अलौकिक बातें हैं सभी। आहाहा ! व्यर्थ बकते हैं अपनी अल्पबुद्धिरूपी ज्ञान परीक्षा करने योग्य नहीं है, आहाहा ! तीनलोक के नाथ जिनेश्वर की आज्ञा में जो आया, उसकी अल्पबुद्धि परीक्षा करने जायेगा, नहीं कर सकेगा। आहाहा ! ऐसी चीज गंभीर है नाथ, तुम गंभीर हो, तुम्हारी शक्ति गंभीर है, तुम्हारी दशा गंभीर है। आहाहा ! दूसरे द्रव्य के गुण भी गंभीर है अनंत गुण दूसरे परमाणु आदि के। आहाहा ! स्व अल्प बुद्धिरूपी ज्ञान परीक्षा करने योग्य नहीं। ***आज्ञा को प्रधान रखकर बने उतनी परीक्षा करने में दोष नहीं, देखा ? आहाहा !***

प्रथम तो सर्वज्ञ की प्रतीति हुई और सर्वज्ञ की आज्ञा की प्रतीति हुई तब यह आज्ञा प्रधान रखकर। आहाहा ! आज्ञा को मुख्य रखकर संभव हो उसकी परीक्षा करने में दोष नहीं।

केवल परीक्षा ही को प्रधान रखने से मात्र परीक्षा हो। आहाहा ! गंभीर स्वभाव प्रभु जिन आज्ञा में तो गंभीर स्वभाव एक-एक चीज का आया (है)। आहाहा ! भगवान की आज्ञा को मुख्य रखकर परीक्षा (करना)... ***केवल परीक्षा की प्रधानता रखके जिन मत से च्युत हो जाये, तब बड़ा दोष आये, तुम बहुत*** शंका करोगे (कि) यह क्या ? आकाश के प्रदेशों से अनंतगुणे गुण है, वह इतने में, और अंगुल के असंख्य में भाग में अनंत निगोदिया है तो इतना, अरे ! प्रभु सुन तो सही प्रभु। यह स्वभाव की महिमा जो भगवान ने देखी है उसी प्रमाण में कही, उस आज्ञा की मुख्यता रखकर परीक्षा करना। आहाहा ! देवीलालजी ! आहाहा ! ***जैन धर्म गुरुगम लिखा है (अलौकिक) दशा है। आहाहा ! किसी का पूर्व का संस्कार हो या वर्तमान गुरुगम हो यह लिखा, तो समझे ऐसी बात है।*** आहाहा !

इसप्रकार जानो, जिनमत से च्युत हो जाये, तब बड़ा दोष आयेगा, इसलिये तो जिनकी अपने हित-अहित पर दृष्टि है... जिनकी अपने हित-अहित पर दृष्टि है। हाँ ! यह तो इस प्रकार जानों, और जिनको अल्पज्ञानियों में महंत बनकर अपना मान, लोभ, बड़ाई, विषयकषाय पुष्ट करना हो, उनकी बात नहीं। आहाहाहा ! सूक्ष्मबात आ गई है। माणेकचन्द्रजी ! बात तो ऐसी है, वह तो जैसे अपने विषयकषाय पुष्ट होंगे वैसा करेंगे। अपनी मान, बड़ाई, पुष्टी होगी वैसा करेंगे। आहाहा ! उनको मोक्षमार्ग का उपदेश नहीं लगता, विपरीतता में किस चीज का उपदेश ? इसप्रकार जानना चाहिए।

देखो ! अर्थकार पण्डितजी ने अष्टपाहुड में... (श्रोता :- ***आज्ञा से काम चल जाये तो परीक्षा क्यों करना ?) आज्ञा से बिलकुल आज्ञा से (कार्य - ऐसा) नहीं, बिलकुल (एकांत) आज्ञा से नहीं। अंदर परीक्षक हो, यह मुख्यता होना चाहिए अन्यथा अकेले वचन से मानना तब दूसरा बतायेगा तो भ्रष्ट हो जायेगा। इसमें आया है मोक्षमार्गप्रकाशक में टोडरमलजी ने... अकेला आज्ञा से माने परंतु अंदर मुख्य परीक्षा होना चाहिए कि ओ हो, आत्मा का स्वभाव ज्ञान, उसका अर्थ यह सर्वज्ञ स्वभाव है, ऐसे तो परीक्षा करना। आहाहा ! और सर्वज्ञ स्वभावी है, तब जिसके मत में सर्वज्ञपना प्रगट हुआ हो उसका कहा पंथ यह पंथ है, जिसके मत में सर्वज्ञ नहीं, वह पंथ चलाये वह पंथ नहीं। समझ में आया ?*** आहाहा ! यहाँ कहते हैं श्रुतकेवली यह व्यवहार है। अब दो पक्ष लेकर बात करेंगे। बाद में - विशेष...

(प्रमाण वचन गुरुदेव !)